International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-01-2021; Accepted: 18-02-2021; Published: 17-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 40-41

बालिकाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन का समाज शास्त्रीय अध्ययन का प्रभाव

नीरज मिश्रा
शोध छात्रा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हमारे देश में शिक्षा पुरातन है। भारत में शिक्षा की जड़ें विदेशी नहीं हैं। वैदिक युग के साधारण कवियों से लेकर आधुनिक युग के बंगाली दार्शनिक तक, शिक्षकों और विद्वानों का एक निर्विघ्न क्रम रहा है। शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करता है। शिक्षा क्षरा हमारे संज्ञयों का उन्मूलन और कठिनाइयों का निवारण होता है तथा विश्व को समझने की क्षमता प्राप्त होती है।

मूलशब्दः शैक्षिक, पिछड़ापन, शास्त्रीय

प्रस्तावना
नारी का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है, जिसकी अवहेलना भारत में सदियों से की गई है। अतः नई शिक्षा नीति में स्पष्ट कहा गया है कि स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा एक मुख्य साधन है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था स्त्रियों को शक्तिशाली बनाने में एक सकारात्मक भूमिका अदा करेगी। यह उनमें नये मूल्यों को जन्म देने की बात करती है, जो पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें उनके शिक्षण प्रशिक्षण कोर्स प्रशासकीय दृष्टिकोंण में परिवर्तन, जिसके लिए उनकी शिक्षा की पुर्नःरचना करने की आवश्यकता है। स्त्री शिक्षा के बारे में विभिन्न पाठ्यक्रमों में गहन अध्ययन किया जाय और शैक्षिक संस्थाओं को प्रोत्साहित किया जाय कि वे स्त्रियों के विकास के क्रियाशील कार्यक्रमों को संचालित करें। निःसंदेह स्त्रियों में साक्षरता का विकास हुआ। महिलाओं के स्तर को ऊपर उठाने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया है। विभिन्न स्तरों पर तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा में भी महिलाओं की भागीदारी पर जोर दिया जायेगा, ताकि पुरूष और महिलाओं के बीच किसी भी प्रकार की भेदभाव की स्थिति न रह जाय। पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तकों में जो भी लिंग भेद दिखाई देता है, नई शिक्षा नीति में उसे समाप्त किया जायेगा।

उद्देश्य
1. बुन्देलखण्ड सम्भाग में 1950–51 से लेकर 1990–91 की अवधि के 40 वर्षों में स्त्री शिक्षा की संख्यात्मक प्रगति का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना।
2. गुणात्मक विकास की दिशा में किए गए कार्यों की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन पद्धति
यह अध्ययन बुन्देलखण्ड क्षेत्र पर किया गया है जिसमें पाँच जिले जालौन, हमीरपुर, बाँदा, ललितपुर, झाँसी शामिल हैं।

परिणाम

सारिणी 1: चुने गए जनपदों में वर्ष 1981 से 1991 तक साक्षरता प्रतिशत

जनपद का नाम	वर्श 1981 में साक्षरता प्रतिशत			वर्श 1991 में साक्षरता प्रतिशत		
	पुरूष	महिला	योग	पुरूष	महिला	योग
जालौन	50.10	18.80	35.87	54.43	25.80	41.23
हमीरपुर	38.93	11.48	26.27	45.07	16.80	31.72
बाँदा	35.58	8.53	23.04	41.82	13.93	28.75
ललितपुर	30.62	9.39	20.82	35.67	12.43	25.37
झाँसी	50.33	21.02	36.71	55.32	27.84	42.72
उत्तर प्रदेश	38.90	14.42	27.40	45.10	21.07	33.84

उत्तर प्रदेश की शिक्षा सांख्यिकी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश लखनऊ, पृ0सं0 39 सन् 1994–95 उत्तर प्रदेश राज्य की अधिकांश जनता गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। राज्य की निर्धनता भी यहाँ की शिक्षा के पिछड़ेपन का मूल कारण बनी हुई है। वर्ष 1981 में जालौन जिले में पुरूषों का शैक्षिक स्तर 50.10 प्रतिशत, महिलाओं का 18.89 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण योग 35.87 प्रतिशत था जबकि वर्ष 1991 में पुरूष का योग 54.43 प्रतिशत, महिलाओ का 25.80 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण योग 41.23 था इसप्रकार वर्ष 1991 का साक्षरता प्रतिशत वर्ष 1981 से अधिक था। जिला हमीरपुर में 1981 पुरूषों का शैक्षिक स्तर 38.93 प्रतिशत, महिलाओं का 11.48 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण योग 31.72 प्रतिशत था। उत्तर प्रदेश में वर्ष 1981 में पुरूष का योग 38.90.43 प्रतिशत, महिलाओ का 13.42 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण योग 27.40 प्रतिशत था। इसप्रकार वर्ष 1991 में उत्तर प्रदेश के पुरूष का शैक्षिक स्तर 45.10 प्रतिशत तथा महिलाओं का 21.07 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण योग 33.84 प्रतिशत था।

बाँदा जिले के पुरूषों का साक्षरता अनुपात 35.58 प्रतिशत व स्त्रियों का साक्षरता अनुपात 8.53 तथा सम्पूर्ण योग 23.04 प्रतिशत था। सन् 1991 में पुरूषों का साक्षरता प्रतिशत 41.82 तथा महिलाओं का 13.43 प्रतिशत और सम्पूर्ण योग 38.75 प्रतिशत था। ललितपुर जिले में 1981 में पुरूषों का शैक्षिक स्तर का अनुपात 30.62 प्रतिशत तथा स्त्री का शैक्षिक अनुपात 9.39 था। इस सारणी से यह विदित होता है कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश की अपेक्षा झाँसी का शैक्षिक स्तर अधिक है। इसलिए झाँसी का साक्षरता प्रतिशत सबसे अधिक है।

सारिणी 2: बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जिलेवार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या

जनपद का नाम	विद्यालय		
	बालक	बालिका	योग
जालौन	39	9	78
हमीरपुर	44	7	51
बाँदा	58	8	66
ललितपुर	15	3	18
झाँसी	51	15	66

उत्तर प्रदेश की शिक्षा सांख्यिकी राज्य शिक्षा संस्थान उ0प्र0 इलाहाबाद सन् 1994–95 पृ0सं0 44 प्रकाशक जगमोहन प्रिंटर्स 29 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में 436 महाविद्यालय हैं व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में बालकों के 5675 विद्यालय हैं और बालिकाओं के 962 विद्यालय हैं तथा सीनियर बेसिक विद्यालय में 12037 विद्यालय, लड़कों के 3509 विद्यालय लड़कियों के हैं। सम्पूर्ण स्कूलों की संख्या 15546 है और जूनियर बेसिक विद्यालय (कोपड़ों) की संख्या 79522 है। इस सारणी से स्पष्ट होता है कि जालौन, हमीरपुर, बाँदा, ललितपुर व झाँसी में महाविद्यालयों व विद्यालयों तथा स्कूलों की संख्या उत्तर प्रदेश की अपेक्षा काफी कम है।

निष्कर्ष

विश्व में प्राचीनकाल से ही महिलाओं और बालिकाओं के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोंण रहा है। विशेषरूप से शिक्षा के प्रति उन्हे आगे बढ़ाने में किसी भी देश ने विशेष अभिरूचि प्रदर्शित नहीं की है। भारतवर्ष लम्बे समय तक ब्रिटिश सरकार के शासन में रहा है, जिसके कारण एक ओर तो पूरी जनसंख्या ही शैक्षिक दृष्टि से काफी पीछे रह गयी है और दूसरी ओर महिलाओं और बालिकाओं के शैक्षिक स्तर में भारी गिरावट आयी है। वैसे तो आजादी के बाद भारतवर्ष की राष्ट्रीय सरकार ने संविधान में यह प्राविधान करके कि 14 वर्ष तक के बच्चों को (बालक–बालिकाओं) को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जायेगी तथा देश में इस आयु वर्ग के जितने भी विद्यार्थी हैं उन्हें 10 वर्ष के अन्दर पूरी तरह से यह सुविधा उपलब्ध करा दी जायेगी। इस हेतु विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में सरकार ने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए काफी प्रयास किया, परन्तु विभिन्न शब्दों में आशा से अधिक जनसंख्यात्मक वृद्धि के कारण सभी प्रकार के पूर्वानुमान गलत हो गये और जिसका परिणाम ये हुआ कि संविधान में किया गया प्राविधान लगभग 50 वर्ष के बाद भी पूरा नहीं हो पाया। उत्तर प्रदेश ही एक ऐसा राज्य है, जहां की जनसंख्या सबसे अधिक है। आजादी के पूर्व जनसंख्या 5.65 करोड़ थी, जबकि वर्ष 1991 में बढ़कर 613.90 करोड़ हो गयी। इस अवधि में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में इस अवधि में जनसंख्या का कुल प्रति 67.07 था जबकि इस अवधि में साक्षरता का कुल प्रतिशत 169.79 था इसमें बालिकाओं की साक्षरता का प्रतिशत 96.80 था। इससे स्पष्ट है कि आजादी के बाद बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बालिकाओं की शिक्षा में कोई विशेष उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है।

सुझाव

1. उत्तर प्रदेश में बालिकाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन का समाज शास्त्रीय अध्ययन।
2. पूर्वांचल में बालिकाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन का समाजशास्त्रीय अध्ययन।
3. उत्तरांचल प्रदेश में बालिकाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन का सामाजशास्त्रीय अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. अशान्त, मोतीलाल (1980). बुन्देलखण्ड दर्शन, शारदा साहित्य, लक्ष्मी प्रकाशन, पुरानी झाई, झाँसी।
2. कबीर, हुमायूँ (1945). बेसिक एजूकेशन, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद।